बुलाने आये काकी चलो सारा काम पड़ा है। उसने कहा कि अब तो मुझ पर तीज माता की पूरी कृपा है इसलिए मैं काम करने नहीं आऊंगी। बच्चों ने जाकर मां को बताया कि आज से काकी काम करने नहीं आयेगी काकी तो नये कपड़े व गहने पहन कर बैठी है। और काकाजी भी घर पर है। सभी जने बहुत खुश थे। हे! तीज माता जैसे आप उस पर प्रसन्न हुई वैसी सब पर प्रसन्न होना, सब के दुःख दूर करना।

बछबारस कहानी

सासू–बहूऐं थी। सासू को गाय चराने वन में जाना था तो बहू को कहा, आज बछबारस है मैं वन में जा रही हूँ तू गवाल्या मूंगाल्या को उबालकर तैयार रखना। ग्वाया–मूंगाल्या बछड़ो का नाम था। बहू विचार मे पड़ गई पर डरती हुई उनको काट कर उबालने रख दिया।

वन से सासू घर आई और बहू से बोली बहू बछड़ो को छोड़ो आज बछबारस है, पहले गाय की पूजा कर लेवें। बहू डर के मारे हाथ मसलने लगी और भगवान से प्रार्थना करने लगी कि हे! भगवान मेरी लाज रखना। भगवान को उसके भोलेपन पर दया आई। हांडी में से भाप निकल रही थी उसे फोड़कर बछड़ा बाहर आ गया। उसके गले में हांडी की किनार रह गई। ये देख सासू ने पूछा, 'बहू ये क्या है ?' बहू बोली, ' सासूजी आपने मुझे बोला तो मैंने बछड़े को समझकर काट कर उबालने रख दिया पर भगवान ने मेरा सत रखा और इसको वापस जीवित कर दिया।' इसीलिये, उस दिन के बाद काटा हुआ कुछ भी पदार्थ इस दिन नहीं खाते ओर गेहूँ, मूंग नहीं खाते।

गाय बछड़े की पूजा करते हैं। हे! बछबारस माता जैसे बहू की लाज रखी वैसे सब की रखना। खोटी की खरी, अधूरी की पूरी।